20-6-67 ओम शान्ति रात्री क्लास

रूहानी बाप बिना इतने बच्चे कोई को हो नही सकते है। ऐसा कोई बाप नही होगा जो कहेंगे कि सब आत्माये हमारे बच्चें है। हम ब्रदर्स है। अब तुम बच्चे जानते हो कि हम भाई-2 भी है। तो भाई-बहन भी है। अब भाई-बहनो को वर्सा मिलना चाहिये बाप से। किस बाप से? अगर प्रजापिता ब्रह्मा को कहें तब तो भाई-बहन के हिसाब से सिर्फ भाईयों को ही मिलता है। अगर शिव बाबा कहे तो भी आत्मीय बच्चे ठहरे। सबको वर्सा मिल जाता। प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे भाई-बहन हो जाते है तो बहन को वर्सा मिल नही सकता है। अभी तुमको प्रजापिता ब्रह्मा से तो वर्सा मिलना नही है। वर्सा मिलता है शिव बाबा से। अविनाशी ज्ञान रत्नो का वर्सा भी ज्ञानसागर शिव बाबा ही देते है। ब्रह्मा नही देते है। सभी को ही बेहद के बाप से वर्सा मिलता है। वो है ज्ञान का सागर है। ब्रह्मा ज्ञान का सागर नही है। यह भी पुआईन्ट बच्चो को सुनानी थी कि पुज्य शिव बाबा की पुजा होती है। तुम तो हो सालिग्राम। सालीग्रामों की भी पुजा होती है। फिर तुम देवता बनते हो। आत्मा प्योअर बन जाती है तो भी वो पुजी जाती है। और साथ-2 तुम इस पढाई से देवता बनते हो तो देवता रूप मे भी पुजे जाते हो। शिव बाबा तो एक ही पुज्य है। वो देवता नही बनते है। सिर्फ एक की ही पुजा होती है। तुम दो बार पुज्य बनते हो। तो इसमे भी तुम्हारा पद जास्ती है। यह पुआईन्टस बच्चो को है सुनानी होती है। नये तो कोई मुश्किल ही समझेंगे। नये को तो पहले-2 बाप की महिमा भारत की महिमा सुनानी है। भारत ही स्वर्ग बनता है ऊँच ते ऊँच भगवान भारत मे ही आते है। अब वो शिव बाबा तो है निराकार अब वो आया कैसे? किस तन मे? प्रश्न तो उठता है ना। कृष्ण मे तो आ नही सकते। वो होते ही है सतयुग मे। वहां पर तो बाप को आने की दरकार ही नही है। अच्छा फिर उधर कहते है कि भागीरथ ने गंगा लाई। अब मनुष्यों की जटाओं मे से पानी तो आ नही सके। भागीरथ कोई नाम नही है। भागीरथ माना कि भाग्यशाली रथ। रथ का नाम चाहिये ना। जैसे परमपिता परमात्मा का नाम है शिव। उनके नाम का किसको भी पता नही है। बाप कहते है मै तो साधारण बूढे तन मे आता हूँ। यह भाग्यशाली रथ ठहरा ना। जो इसमे बाप आकर प्रवेश करते है। भगवान के काम मे कोई शरीर ~~[illegible]~~ आवे वो सिर्फ एक ही है। बाप कहते है कि मुझे प्रकृती (वासी) का आधार लेना पड़ता है। बच्चे जानते है कि बेहद बाप आकर सारे विश्व को हेवन बना देते है। भारत ही विश्व का मालिक बनता है। उनका ही राज्य था। अभी थोडेई कोई का राज्य है। सतयुग मे छोटा झाड होता है। गायन भी है घटाई मे सूर्य....तारे तो गिनती नही हो सकते है ना। ज्ञान सूर्य, ज्ञान चन्द्रमा, और बच्चो को ज्ञान सितारे कहा जाता है। सितारे फिर कहते है तुम मात-पिता....यह किनको कहते है? गायन त जो है उनको फिर कैक्ट करना होता है। बाप आकर सभ सभी बातो का सार बताते है। ज्ञान सागर तो वो बाप ही है। भक्ति मे ज्ञान नही है। ज्ञान मिलता है है संगम युग पर। जिससे ही दिन होता है। भारत स्वर्ग बन जाता है। सतयुग त्रेता मे भक्ति होती ही नही सभी सुख मे है। क्योकि भगवान नई सृष्टी रचते है ना। वो है ही सुखधाम। यह ज्ञान भी तुमको अभी ही मिल रहा है। प्रालब्ध मिले फिर ज्ञान खत्म हो जावेगा। ज्ञान परमपरा से नही चल सकता है। तुम बच्चो को ही रचता और रचना की आद मध्य अन्त की नालेज सुनाते है। त्रिकाल दर्शी सिर्फ तुमको ही बना रहे है। देवताये भी त्रिकालदर्शी नही है। शुद्र भी त्रिकाल दर्शी नही होते है। अगर कोई कहते है कि फलाना त्रिकालदर्शी था तो वो तो झूठ बोलते है। तुम मानेंगे नही। तुम जानते हो कि यह ज्ञान बाप ही हर बार देते है जिससे ही कि विश्व सतयुग बन जाता है। अभी तो विश्व भर सारा नर्क है। नई दुनियां मे तो देवी देवताये ही थे। स्वर्ग था। फिर वही दुनियां पुरानी होती है। कल्प बाद फिर रावण राज्य शुरू होता है। देवताये वाम मार्ग मे चले गये। फिर उनको देवी देवता नही कहा जाता है। तुम्हारी पुआईन्टस तो ढेर है। सात रोज का कोर्स लेना पड़े। लौकिक तो वो ही जिनको टेंट आवेगा। फिर अपना प्रोग्राम बदल कर भी

बदल कर भी आवेंगे। सुनेंगे जरूर पैसे तो कोटो मे कोऊ ही निकलेत है जो उठ सकते है। बच्चे जानते है कि हम शिव बाबा पास जाते है। वो तो है निराकार। उनके पास कैसे जा सकते है। फिर कहना पडे कि हम तो बाप दादा पास जाते है। यह भी बहुत मुश्किल कोई की बुधी मे बैठता है। जिनकी ही बुधी मे बैठता है वो ही श्रीमत पर चलते है। जरूर चलेंगे। श्रीमत पर चलने वाले को सपूत कहेंगे। बाप कहते है तुम्हारे पास क्या है पोतामेल बताओ तो देखेंगे कि कुछ लगा सकते हो? यां नही। इतना धन है जो 8-10वर्ष मे पुरा हो सकता है तो भी कहेंगे कि यह पडा रहे। देखेंगे इनके पास बहुत धन है। तो कहेंगे कि सफल करो। हास्पिटल यूनिवरसिटी निकालो। तो मनुष्य सफल पावें। 21जन्मो के लिये निरोगी काया मिल जावेगी। अज्ञान काल मे मनुष्य इतना खर्चाउकरते है मिलता क्या है? कुछ भी मिलने का नही है। तुम जानते होयह मन्दिर आद कुछ भी रहेने का नही है। मनुष्य थौडेई समझते है। कहो तो भी मानेंगे नही। बाप कहते है मै आया हूं पतित को पावन बना कर ले जाने लिये। मुफ्त मे पैसे गंवाते रहते हो। इससे तो यह रुहानी हास्पिटल निकालो जिससे मनुष्य से देवता बन जावे। मन्दिर आद बनाते है तुम कहेंगे यह तो पैसे गंवा रहे है। विनाश सामेन खडा है। भक्ति मार्ग अब मुंदाबाद होता है। बाप बैठ सृष्टी कीआद मध्य अन्त का राज बताते है। कहते है मै आया हूं भारत कोहेवन बनाने। हैल का विनाश करवाने। समझाने पर कोई को तीर लग जावेगा। तो मन्दिर बनाना भी बन्द कर देंगे। तो मन्दिर के साथ एक हाल भी बनाओ। जहां पर मनुष्यों को समझाया जावे। इन ल-न ने कैसे यह पद पाया। बाप ने राजयोग सिखाया, जिससे ही मनुष्य से देवता बने। अभी तो कलयुग का अन्त है। अभी तुम नर से नारायण बनने का सच्चा-2 ज्ञान सुनते हो। तुम्हारे सामेन ही वो फिर झूठी कथाये सुनाते रहते है। सत्यनारायण की कथा करते है तो तुमको बुलाते है। निमन्त्रण देते है। तो जाना चाहिये। कोई मरते है तो फिर ब्रह्माकुमारियों को बुलाते है। क्योकि वो शांति मे और खुशी मे लाती है। तुमको तो बहुत ही बुलावेंगे। तुम जाकर सत्यनारायण की कथा सुनावेंगे। सुनने केबदले बैठ कर सुनाना चाहिये। तुम्हारी सर्विस तो बहुत चलनी है। परन्तु इतना हौसला अभी चढा नही है। बाबा कहते है श्मशान मे जाओ। वहां तुमको बहुत ग्राहक मिलेंगे। वहां पर प्रदर्शनी लगा कर बैठ समझाना चाहिये। जब तक कि मुर्दा जल कर पूरा हो जावे। अच्छा कोई ने नां भी सुना हार्ट फेल नही होना चाहिये। फिर दूसरे दिन तीसरे दिन जाना चाहिये। सर्विस बहुत है। ओम

21-6-67 : रात्री क्लास:—— चना भी बेचे तो रचता और रचना का राज बैठ सुनावे तो मनुष्य वण्डर खावेंगे। जो ज्ञान ऋषी मुनी कोई नही देते थे। वो यह सुना रहा है। झट समझेंगे यह कोई ब्रह्माकुमारी का पाला हुआ है। तुम बच्चो को ज्ञान की लौरी दी जाती है। ज्ञान की लाठी ऐसी है जो दुनियां भर मे कोई भी नही जानते है। वण्डरफुल बाते है। तुम संगम युगी ब्राह्मण हो। यह चना भी बेच सकते है तो चित्र भी बेच सकते है। खर्चा जो भी होता है वो निकल सकता है। बहुत बिक सकता है। यह धन्धा भी है। कलैण्डर्स भी छपवा कर बेचते है। डबल वां डेढ गुणा करके। तुम्हारा भी ऐसे ही हो सकता है। हमेशा धन्धे मैं मनुष्य बहुत होशियार होते है। तुम्हारी यह चीजे ऐसी है है जो हर एक लेवे। प्रदर्शनी मे तो बहुत लेंगे। बैजिज भी बहुत बिकसकेत है। परन्तु इतना ध्यान नही दे दिया जाता है। इनको तो कुछ अखबार मे नही आता है। यह लख करोड क्या है। सब खत्म हो जावेंगे। बाबा को तो नशा रहता है वर्णन करते है। यह करोड तो कुछभी काम के नही है। स्वर्गतो स्वर्ग है। यही तो मनुष्यनर्क मे है नां। सतयुग मे तुम बहुत सुखी रहते हो। अथाह सुख है। तुम बहन भाई सब कहते होबाबा हम आपको फालो करेंगे। विजय माला मे आवेंगे। पढाई एक है है। पढाने वाला भी एक ही है। अच्छा मीठे-2 सिकीलधे बच्चो को बाप दादा का यादप्यार गुडनाईट